
श्री
गायत्री
चालीसा
मूल्य
२५
पैसा
युग निर्माण योजना, मथुरा

गायत्री तपोभूमि, मथुरा।

देश विदेश की हजारों युग निर्माण परिवार शाखाओं का केन्द्र है—गायत्री तपोभूमि। राष्ट्र और विश्व के भावनात्मक नव निर्माण के लिए युग निर्माण योजना के शतसूत्री कार्यक्रमों का संचालन यहीं से होता है। यह एक अति पुण्य प्रेरक आध्यात्मिक ऊष्मा सम्पन्न तप-स्थली है। विशाल गायत्री मंत्र का हस्तलिखित संग्रह-कक्ष, प्रमुख तीर्थों का जल–रज संग्रह, यज्ञशाला में कभी न बुझने दी जाने वाली अखंड अग्नि, नित्य प्रातःकाल हवन, धार्मिक, आध्यात्मिक और सामाजिक ग्रन्थों का पुस्तकालय, अपने ढंग का अनूठा युग निर्माण विद्यालय-जहां छात्रों को स्वावलम्बी बनाने के लिए औद्योगिक प्रशिक्षण देने के साथ-साथ उनके बौद्धिक, चारित्रिक और नैतिक विकास पर भी ध्यान दिया जाता है आदि यहां की प्रमुख स्थानीय विशेषतायें हैं।

॥ वन्दे वेद मातरम् ॥

॥ श्री गायत्री चालीसा ॥



दोहा

ह्रीं, श्रीं, क्लीं, मेधा, प्रभा, जीवनज्योति प्रचण्ड।
शांति, क्रांति, जागृति, प्रगति, रचना शक्ति अखण्ड॥
जगत जननि, मंगल करनि, गायत्री सुख धाम।
प्रणवों सावित्री, स्वधा, स्वाहा पूरन काम॥

भूर्भुवः स्वः ॐ युत जननी।
गायत्री नित कलिमल दहनी॥

अक्षर चौबिस परम पुनीता।
इनमें बसें शास्त्र श्रुति गीता॥
शाश्वत सतोगुणी सतरूपा।
सत्य सनातन सुधा अनूपा॥
हंसारूढ़ श्वेताम्बर धारी।
स्वर्ण कांति शुचि गगन बिहारी॥
पुस्तक पुष्प कमण्डलु माला।
शुभ्र वर्ण तनु नयन विशाला॥

ध्यान धरत पुलकित हिय होई।
सुख उपजत, दुःख दुरमति खोई॥
कामधेनु तुम सुर तरु छाया।
निराकार की अद्भुत माया॥
तुम्हरी शरण गहै जो कोई।
तरै सकल संकट सों सोई॥
सरस्वती लक्ष्मी तुम काली।

दिपै तुम्हारी ज्योति निराली॥

तुम्हरी महिमा पार न पावैं ।
जो शारदशतमुख गुण गावैं ॥
चार वेद की मातु पुनीता ।
तुम ब्रह्माणी गौरी सीता ॥
महामन्त्र जितने जग माहीं ।
कोऊ गायत्री सम नाहीं ॥
सुमिरत हिय में ज्ञान प्रकासै ।
आलस पाप अविद्या नासै ॥

सृष्टि बीज जग जननि भवानी।
कालरात्रि वरदा कल्याणी॥
ब्रह्मा विष्णु रुद्र सुर जेते।
तुम सों पावें सुरता तेते॥
तुम भक्तन की भक्त तुम्हारे।
जननिहिं पुत्र प्राण ते प्यारे॥
महिमा अपरम्पार तुम्हारी।
जय जय जय त्रिपदा भयहारी॥

पूरित सकल ज्ञान विज्ञाना।
तुम सम अधिक न जग में आना॥
तुमहिं जानि कछु रहै न शेषा।
तुमहिं पाय कछु रहै न क्लेशा॥
जानत तुमहिं तुमहिं ह्वै जाई।
पारस परसि कुधातु सुहाई॥
तुम्हरी शक्ति दिपै सब ठाईं।
माता तुम सब ठौर समाई॥

ग्रह नक्षत्र ब्रह्माण्ड घनेरे।
सब गतिवान तुम्हारे प्रेरे॥
सकल सृष्टि की प्राण विधाता।
पालक, पोषक, नाशक, त्राता॥
मातेश्वरी दया व्रत धारी।
तुम सन तरे पातकी भारी॥
जापर कृपा तुम्हारी होई।
तापर कृपा कर सब कोई॥

मंद बुद्धि ते बुधि बल पावें ।
रोगी रोग रहित ह्वै जावें ॥
दारिद मिटै कटै सब पीरा ।
नाशैं दुःख हरै भव भीरा ॥
गृह क्लेश चित चिन्ता भारी ।
नासै गांयत्री भय हारी ॥
सन्तति हीन सुसन्तति पावें ।
सुख सम्पत्ति युत मोद मनावें ॥

भूत पिशाच सबै भय खावें।
यम के दूत निकट नहिं आवें॥
जो सधवा सुमिरें चित लाई।
अछत सुहाग सदा सुखदाई॥
घरें वर सुखप्रद लहैं कुमारी।
विधवा रहें सत्य व्रत धारी॥
जयति जयति जगदंब भवानी।
तुम सम और दयालु न दानी॥

१२ जो सद्गुरु सों दीक्षा पावें।
सो साधन को सफल बनावें॥
सुमिरन करें सुरुचि बड़भागी।
लहैं मनोरथ गृही विरागी॥
अष्ट सिद्धि नवनिधि की दाता।
सब समर्थ गायत्री माता॥
ऋषि मुनि यती तपस्वी योगी।

आरत अर्थी चिन्तित भोगी॥
१३ जो जो शरण तुम्हारी आवें।

जो जो शरण तुम्हारी आवै ।
सो सो मन वांछित फल पावैं ॥
बल, बुधि, विद्या, शील स्वभाऊ ।
धन, वैभव, यश, तेज उछाऊ ॥
सकल बढ़ें उपजें सुख नाना ।
जो यह पाठ करै धरि ध्याना ॥

यह चालीसा भक्ति युत, पाठ करें जो कोय ।
तापर कृपा प्रसन्नता, गायत्री की होय ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्य भर्गो देवस्य
धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

आरती गायत्री जी की

१८ जयति जय गायत्री माता, जयति जय गायत्री माता।
आदि शक्ति तुम अलख निरंजन जग पालन कर्त्री।
दुःख शोक भय क्लेश कलह दारिद्रय दैन्य हर्त्री॥
ब्रह्म रूपिणी, प्रणत पालिनी, जगद् धातृ अम्बे।
भव भय हारी, जन हितकारी, सुखदा जगदम्बे॥
भयहारिणि, भवतारिणि, अनघे अज आनन्द राशी।
अविकारी, अघहरी, अविचलित अमले, अविनाशी॥
कामधेनु सत् चित् आनन्दा जय गंगा गीता।
सविता की शाश्वती, शक्ति तुम सावित्री सीता॥
ऋक्, यजु, साम, अथर्व, प्रणयनी, प्रणव महामहिमे।
कुण्डलिनी सहस्रार, सुषुम्ना शोभा गुण गरिमे॥

कुण्डलिनी सहस्रार सुषुम्ना शोभा गुण गरिमा ॥

स्वाहा, स्वधा, शची, ब्रह्माणी राधा रुद्राणी।
१५ जय सतरूपा, वाणी, विद्या कमला, कल्याणी ॥
जननी हम हैं दीन, हीन, दुःख दारिद के घेरे।
यदपि कुटिल, कपटी कपूत तउ बालक हैं तेरे ॥
स्नेहसनी करुणामय माता चरण-शरण दीजै।
बिलख रहे हम शिशु-सुत तेरे दया दृष्टि कीजै ॥
काम, क्रोध, मद, लोभ, दम्भ, दुर्भाव द्वेष हरिये।
शुद्ध बुद्धि, निष्पाप हृदय मन को पवित्र करिये ॥
तुम समर्थ सब भांति तारिणी, तुष्टि, पुष्टि, त्राता।
सत मारग पर हमें चलाओ जो है सुखदाता ॥
जयति जय गायत्री माता, जयति जय गायत्री माता ॥

गायत्री साधना के वेदोक्त, तंत्रोक्त और योगमार्गी साध-
नाओं में अनुभवी गुरु के समान मार्ग दर्शन करने वाले
जीवन जीने की कला, आत्म निर्माण, परिवार
निर्माण तथा व्यावहारिक अध्यात्मवाद का
अनुपम अनूठा और सस्ता साहित्य
मिलने का एक मात्र स्थान।

प्रकाशक—

युग निर्माण योजना

गायत्री तपोभूमि मथुरा (उ० प्र०)

पिनकोड नं०—२८१००३ फोन नं० ४०१५

मुद्रक—युग निर्माण प्रेस, गायत्री तपोभूमि, मथुरा।